Date 2/[illegible]/20

PHILOSOPHY

NYAYA PHILOSOPHY

न्याय दर्शन के प्रवर्तक गौतम महर्षि हैं।
प्रमा के करण को प्रमाण कहते हैं।

प्रमाण चार हैं—

1. **प्रत्यक्ष** → इन्द्रिय और विषयों के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष कहलाता है, इस परिभाषा में तीन महत्वपूर्ण बातें हैं—
ⓐ इन्द्रिय ⓑ विषय और ⓒ सन्निकर्ष,
वास्तव में ये तीनों प्रत्यक्ष प्रमाण के कारक हैं,
प्रत्यक्ष दो प्रकार के होते हैं ① लौकिक ② अलौकिक

2. **अनुमान** → अनुमान वह है जो पहले के बाद आता है अर्थात प्रत्यक्ष के बाद आनेवाला प्रमाण अनुमान है, न्यायदर्शन में अनुमान के तीन अंग हैं.- ① हेतु ② साध्य और ③ पक्ष
हेतु और साध्य जिस स्थल पर पाये जाते हैं, उसे पक्ष कहा जाता है। जैसे- पर्वत पर धुआँ और आग
यहाँ पर्वत में हेतु (धुँआ) का प्रत्यक्ष होता है, लेकिन, साध्य (आग) का प्रत्यक्ष नहीं होता है, वास्तव में साध्य है या नहीं- यह जानना अनुमान का कार्य है,

3. **उपमान** → उपमान वह प्रमाण है जिसके द्वारा किसी ज्ञात वस्तु की समानता के आधार पर अज्ञात वस्तु का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, इस प्राप्त